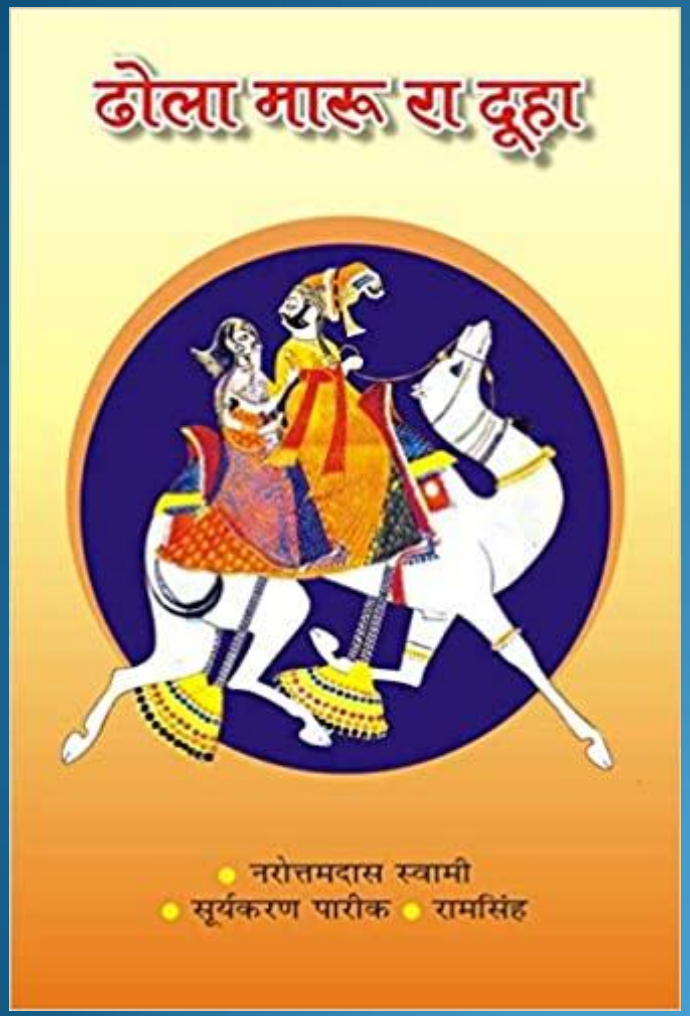

ढोला मारू रा दूहा

(दोहा 136 से 140)

डॉ. नवीन नंदवाना
हिंदी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राजस्थान)

मारवणी का संदेश - 136

पंथी, एक सँदेसड़उ, कहिज्यउ सात सलाँम।

जबथी हमतुम बिछड़े, नयणे नींद हराँम।।१३६

भाव-

हे पंथी मेरा एक सँदेसा है। मेरे प्रियतम को सात सलाम कहना और कहना कि जब से हम तुम बिछुड़े हैं तभी से आँखों को नींद हराम है।

मारवणी का संदेश - 137

पंथी हाथ सँदेसड़इ, धण बिललंती देह।

पगसूँ काढइ लीहटी, उर आँसुआँ भरेह।।१३७

भाव-

मारवणी विलाप करती हुई पथिक के हाथ सँदेसा देती है, पैर से(पृथ्वी पर) रेखा खींचती है और अपना हृदय आँसुओं से भर लेती है।

मारवणी का संदेश - 138

ढोला, ढीली हर किया, मूँक्या मनह विसारि।

संदेसउ हन पाठवइ, जीवाँ किसइ अधारि।।१३८

भाव-

हे ढोला, तूमने प्रेम को शिथिल कर दिया और मुझे मन से बिसार दिया है। सँदेसा तक नहीं भेजते, बताओ किस आधार पर जिएँ।

मारवणी का संदेश - 139

ढोला, ढीली हर मुझ, दीठउ घणो जणेह।

चोल बरन्ने कप्पड़े, सावर धन अणेह।।१३९

भाव-

हे ढोला, मेरी प्रेमस्मृति को शिथिलकर, मजीठ रंग के वस्त्रों में(अर्थात दूल्हे की पोशाक में) उस अन्य पत्नी को ब्याहकर लाते हुए तुमको बहुत से लोगों ने देखा है।

मारवणी का संदेश - 140

कागळ नहीं, क मस नहीं, नहीं क लेखणहार।

संदेसा ही नाविया, जीवुँ किस आधार।। १४०

भाव-

कागज नहीं है या स्याही नहीं है या लिखनेवाला नहीं है ?

तुम्हारे सँदेसे नहीं आए, मैं किस आधार पर जियूँ।